IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'सरोज स्मृति' : शोकगीत का औदात्य

डॉ. मुकेश बर्णवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर
विवेकानंद महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

'निराला' आधुनिक हिंदी कविता की लगभग आधी सदी का प्रतिनिधि चेहरा है. साहित्य पर जब द्विवेदी युग की नैतिकता, आदर्शवादिता की आभा धीमी पड़ने लगी थी और कविता कसमसाते हुए नए रास्तों के संधान के लिए व्यग्र थी तभी 'निराला' ने गेम चेंजर बनते हुए 'जूही की कली' कविता लिखी जो न सिर्फ बदलती कविता की प्रतिनिधि रचना थी, बल्कि तत्कालीन काव्य मान्यताओं से मुठभेड़ करने वाली रचना भी थी. प्रतिक्रियास्वरूप तमाम आलोचनाओं, लांछनों के बावजूद उन्होंने मुखरता के साथ 'जूही की कली' रूपी अपनी अपनी काव्यगत मान्यताओं का बचाव करते हुए कहा कि मनुष्य की तरह कविता की भी मुक्ति होती है, छंद के शासन से मुक्ति. 'खुल गए छंद के बंध' लिखकर मुक्त छंद की आकांक्षा करने वाले 'निराला' कविता में लय की मौजूदगी पर बल देते हैं. उनकी इस विशेषता पर उनके प्रखर आलोचक रामचंद्र शुक्ल भी कहते हैं – 'संगीत को काव्य के और काव्य को संगीत के अधिक निकट लाने का सबसे अधिक प्रयास निराला ने किया.

स्वच्छंदतावादी कवि 'निराला' अपनी काव्य यात्रा में आरम्भ से अंत तक कथ्य और अभिव्यक्ति के स्तर पर लगातार नए-नए आयाम खोलते रहे. शिल्प के स्तर पर भी उनकी कविताएं बहुआयामी रहीं. 'निराला' की कविताओं में प्रगीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है. ये प्रगीत पूर्व के साहित्यिक गीतों से अलग आधुनिक प्रगीत हैं. प्रगीत रचना भावों और रसों की प्रगाढ़ता का संयोग होती हैं जिसमें कवि की अनुभूति किसी मार्मिक प्रसंग या मानस प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करती हैं. गीतात्मक कविता लिखने वाली सबसे बड़ी कवि महादेवी वर्मा कहती हैं –'सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था का गिने-चुने शब्दों में एक स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है.'

महाप्राण कवि 'निराला' के भी प्रायः सभी प्रगीत आत्मपरक ही हैं. 'सरोज स्मृति' ऐसी ही वैचारिक और भावाकुल जार देने वाली गीतात्मक कविता है जो कवि के निज जीवन के एक दुखद प्रसंग की मर्मभेदी अभिव्यक्ति है. यह कविता दुखों के पहाड़ के विस्फोट में पिता 'निराला' के टूटन और आत्मकरुणा का चित्र है जिसको गहराई देने का काम विभिन्न विषम सामाजिक परिस्थितियों ने किया. 'निराला' ने अपनी व्यथा, 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूं आज जो नहीं कही' से हर आर्थिक रूप से विपन्न भारतीय पिता की व्यथा-कथा से एकमेक कर दिया है. पुत्री सरोज के मृत्युशोक से दुखी पिता का मन, उनके कवि हृदय का संस्पर्श पाकर अपने सघन व्यथानुभव को एक महान शोकगीत में तब्दील कर देता है.

'सरोज स्मृति' हिंदी कविता का प्रतिनिधि शोकगीत है. शोकगीत अंग्रेजी के एलेजी का हिंदी प्रतिरूप है जिसका विकास यूनानी शब्द 'इलिजिया' से हुआ है. अंग्रेजी साहित्य में यह शब्द किसी भाव, अनुभूति विशेष के स्थान पर छंद विशेष का व्यंजक था. सामान्यतः इलिजियाक छंद में लिखी सभी प्रगीतात्मक रचनाएं एलेजी के नाम से स्वीकृत की जाती थीं. कालांतर में अंग्रेजी साहित्य में एलेजी शब् छंद विशेष का वचन नहीं बल्कि मृत्युजन्य शोकोदगार को व्यक्त करने वाली रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में संक्षिप्त आकार, संयत भावावेगपूर्ण चिन्तनप्रधान शैली, कारुणिकता, गाम्भीर्य और सहज तथा निश्छल अभिव्यक्ति आदि शोकगीत के अपेक्षित गुण माने गए हैं. अन्य प्रगीतों की तुलना में शोकगीत में तीव्रतम अनुभूतियों की अधिकता अपेक्षित होती है. 'सरोज स्मृति' उपर्युक्त सभी मापदंडों पर की दृष्टि से सम्पूर्ण हिंदी कविता की अनमोल निधि है. इसमें पुत्री के निधन से शोकाकुल पिता के आवेगपूर्ण भावोद्गारों की सहज अभिव्यक्ति है जिसमें अनुभूति की उत्कटता और विषाद की प्रगाढ़ता के बीच कहीं भी 'कवि' स्खलित होता दिखाई नहीं देता है, बल्कि संयमित और गरिमामयी रूप में ही सामने आता है. यह एक विषादमय गीतात्मक गद्य है जिसे सामाजिक विषमता और क्रूरता के विरोधी स्वर ने और भी प्रगाढ़ बना दिया है. कवि और कविता की मूल पीड़ा है –'धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध'. कविता में अपराजेय चेतना के 'निराला' विचारानुकूल अपने समाज, परिवेश और साहित्य के स्याह पक्ष, जड़ स्थिति को उजागर करते हैं और उसे तोड़कर एक नए लोक का सृजन करते हैं-

'तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम

मैं सामाजिक योग के प्रथम

लग्न के; पढ़ूंगा स्वयं मंत्र'

कवि 'निराला' पुत्री सरोज के माध्यम से अपनी संक्षिप्त आत्मकथा ही कहते हैं. 'निराला' छायावादी कवि थे और उनकी शुरुआती मुक्तछंद की कविताओं को तत्कालीन शीर्ष संपादक विभिन्न प्रकार की निन्दात्मक टिप्पणियों सहित लौटा देते थे और उन्हें इस स्तर पर निरंतर संघर्ष करना पड़ा था. क्योंकि उनकी कविता मान्य मापदंडों के अनुकूल नहीं होती थीं; इसके बावजूद वे अपनी काव्य मान्यताओं पर अडिग रहे. इसी संघर्ष के दौर में पत्नी की मृत्यु, फिर पुत्री सरोज की परवरिश और अपनी आर्थिक विपन्नता में ही सरोज के विवाह का प्रश्न आया; विद्रोही व्यक्तित्व के 'निराला' ने अपने समुदाय की रुढियों को तोड़ा. कुछ ही समय बाद धनाभाव में इलाज न हो पाने के कारण पुत्री सरोज की अकाल मृत्यु हो गई.

'निराला' अपनी आर्थिक नाकामी के लिए कभी किसी बहाने की आड़ नहीं लेते; बल्कि पिता के रूप में अपनी अक्षमता उन्हें निरंतर कचोटती रहती थी और यही आत्मस्वीकृति 'सरोज स्मृति' में आदि से अंत तक शोकमय गंभीर वातावरण की सृष्टि करता है-

'धन्ये मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका!

जाना तो अर्थगमोपाय,

पर रहा सदा संकुचित-काय

लखकर अनर्थ पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ समर.'

'निराला' की त्रासदपूर्ण प्रारंभिक ज़िन्दगी का एक बड़ा कारण उनका अपारंपरिक चरित्र भी था जिसके कारण वे समाज या साहित्य की जड़ मान्यताओं का मुखर विरोध करते हैं. इसी मुखरता के कारण उन्होंने अपनी इकलौती पुत्री को असमय खोया था. सरोज की मृत्यु न ही सहज मृत्यु है और न नियतिजनित है बल्कि प्रतिकूल परिस्थितिजनित है जिस पर कवि ने विस्तार से प्रकाश डाला है. सरोज के बाल्यकाल का चित्रण, कवि के पुनर्विवाह का प्रसंग, पुत्री के विवाह का प्रसंग, कान्यकुब्ज कुल का वर्गचरित्र आदि प्रसंग कवि के आंतरिक संघर्ष और तनाव को सामने लाते हैं. दूधनाथ सिंह कहते है- 'दरअसल यह कविता अतीत, स्मृति, मृत्यु की असीम करुणा और भावोवेगिता, सामाजिक अवमानना और साहित्यिक उपेक्षा की एकत्र संयमित अनुभुत्ति की अभिव्यक्ति का अद्भुत नमूना है.'

कवि कविता के कई प्रसंगों में स्वीकृत मान्यताओं को तोड़ते दिखाई देते हैं; चाहे वह साहित्यिक हो या सामाजिक. साहित्य के क्षेत्र में उनकी कविता 'जूही की कली' की या अन्य मुक्त छंद वाली कविताओं के लिए उन्हें लगातार उपेक्षा और आलोचना झेलनी पड़ी. छायावाद के ही अन्य कवियों की तुलना में 'निराला' इस मोर्चे पर सबसे अधिक संघर्षरत थे; हालांकि बाद के वर्षों में इस स्थिति के उलट वे ही सर्वाधिक प्रशंसित रहे लेकिन तब जबकि पुत्री सरोज की मृत्यु तक का पीड़ादायक और अपमानजनक दौर गुजर चुका था. साहित्यिक निराशाजनक स्थिति में अपने सर्जनात्मक संघर्षों, हताशाजनक परिणामों को, हिंदी जगत के बहुमुखी विरोध और तिरस्कार को हिंदी का स्नेहोपहार मानकर सहिष्णुता से ग्रहण करते हैं और परिस्थितियों के बदलने पर युगनिर्माता कवि मान लिए जाते हैं. साहित्यिक जगत की ये भी एक विडम्बना है कि रचनाकार को जब स्वीकृति की सबसे ज्यादा जरुरत होती है तभी वह विरोध के ओलों को झेलता है.

सामाजिक मोर्चे पर युवावस्था में ही अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद कुंडली में लिखे दूसरे विवाह संबंधी वचनों को उन्होंने अस्वीकार कर दिया और कुंडली बालिका सरोज को खेलने दे दिया. बालिका सरोज द्वारा कुंडली का फटना 'निराला' के भाग्य संबंधी मान्यताओं के प्रति प्रतीकात्मक अस्वीकृति है. कान्यकुब्ज समाज की दहेज़ प्रथा जैसी कुरीतियों का बहिष्कार कर 'निराला' सादे समारोह में स्वयं पुरोहित कर्म कर पुत्री का विवाह करने को तत्पर होते हैं. नामवर सिंह 'निराला' के विद्रोही स्वाभाव को बताते हुए कविता के कुछ सन्दर्भों का उदाहरण देते हैं. कविता में, बाल्यावस्था से आगे बढ़कर यौवन क्षेत्र में पदार्पण करने वाली सरोज के सौंदर्य का बिम्बात्मक चित्र रचा गया है. सरोज, अपनी पुत्री के यौवन सौंदर्य के संयमित और विलक्षण चित्रण में उन्होंने जिस प्रकार की तटस्थता दिखाई है, वो साहित्य के लिए अनुकरणीय है. इसी प्रकार पुत्री के विवाह के पश्चात् वाली पंक्तियों में कवि ने लिखा है-

'मां की कुल शिक्षा मैंने दी, पुष्प सेज तेरी स्वयं रची'

अपनी पुत्री के सन्दर्भ में ये स्वीकृति कि उसके सुहाग की सेज मैंने स्वयं सजाई है; ये भावोभिव्यक्ति अपने-आप में साहसिक और अद्भुत है जिसका जोड़ साहित्य में दूसरा नहीं है. अपने इन वर्णनों में कवि 'निराला' की उदात्तता जिस तरह उभरकर सामने आती है, उसी से वे हिंदी साहित्य के बड़े कवि माने जाते हैं. पश्चिमी काव्य विचारक टी. एस. इलिएट का मानना है कि कवि का व्यक्तित्व तो एक माध्यम है जिसमें विविध अनुभव, भाव, मनोवेग और विचारों का संयोग होता है और यह संयोग ही रचना है. इलियट भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाव को जगाने वाली वस्तुओं आदि के चित्रण पर बल देते हैं. महान कविता की विशेषता यह है कि उसमें विभिन्न भावों का संयोजन कितनी कुशलता से किया गया है. यह समायोजन अपने श्रेष्ठ रूप में 'सरोज स्मृति' में है. दूसरी तरफ महान रचनाकार की कसौटी ये है कि वह अनुभूत करने वाले व्यक्तित्व का रचने वाले व्यक्तित्व से अलगाव कितनी निर्वैयक्तिकता के साथ करता है. इलियट निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत में कहते हैं कि कविता में कवि का व्यतित्व नहीं बल्कि व्यक्तित्व की भावनाओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, कवि के लिए भावों का उच्छलन नहीं भावों की मुक्ति होना जरुरी है. इस प्रक्रिया में कवि अपनी तीव्र संवेदना और ग्रहण क्षमता से समाज को और निजी अनुभूति को चिंतन, अनुभव और कौशल से पुनर्सर्जित कर सबके अनुभव में बदल देता है; तभी श्रेष्ठ काव्य की रचना होती है. इसी प्रकार का श्रेष्ठ काव्य 'सरोज स्मृति' है जिसमें कवि 'निराला' अपनी

अनुभूति और सामाजिक अनुभव को पुनर्सर्जन द्वारा निर्वैयक्तिक भाव से सबकी अनुभूति बना देते हैं. तभी जब किशोरी सरोज का सौंदर्य-वर्णन या शिशु सरोज का वात्सल्य-वर्णन होता है तो हम एक पिता नहीं बलिक कवि 'निराला' की उपस्थिति पाते हैं-

'वह चली एक अज्ञात बात

चूमती केश-मृदु नवल गात,

देखती सकल निष्पलक नयन

तू, समझा मैं तेरा जीवन!'

यह ऐसी रूप छवि है जिसे पिता नहीं बल्कि कवि का व्यक्तित्व उद्दीप्त होता है. कवि उन आँखों में अपनी छवि देखता है और उस छवि को अपनी कल्पना से भर देता है. 'निराला' अपनी पुत्री के सौंदर्य को उदात्तता के साथ याद करते हैं तभी उसकी तुलना भगवतगीता के औदात्य से करते हैं. इस रूपक में वे अपनी पुत्री को 'गीते' संबोधित करते हुए कहते हैं कि जिस तरह गीता अपने अष्टादशाध्याय के बाद समाप्त हो जाती है उसी तरह तुमने भी अपने अठारह वर्ष पूरे कर मृत्यु का वरण कर लिया. सरोज की असमय मृत्यु के बाद 'निराला'उसके रूप को कविता में बार-बार पूरी संवेदना से याद करते हैं; मोह की उस सीमा तक कि पुत्री में पत्नी का रूप संक्रमित होकर आने लगता है. एक अन्य प्रसंग में कवि कहते हैं-

'तू खुली एक उच्छवास-संग

विश्वास-स्तब्ध बंध अंग-अंग

नत नयनों से आलोक उतर

कांपा अधरों पर थर-थर-थर.'

युवती सरोज का यह चित्र विवाह के बाद का है. होठों में फंसी बिजली लिए मंद हंसी, सरोज का एक उच्छवास के साथ धीरे-धीरे खुलना और उस खुलने में बंधे अंगों का ठिठक पड़ना, झुकी आँखों से कांपते होठों का, एक भीतरी आलोक का थरथराते हुए उतरना – ये सारे कोमल संकेत स्त्री सौंदर्य के क्रमशः उभरते जाने के हैं. पुत्री में पत्नी के सौंदर्य की छवि देखना या पुत्री के सौंदर्य का औदात्यपूर्ण श्रृंगारिक वर्णन करना; ये कवि की निर्वैयक्तिकता को सर्वोच्च स्तर तक ले जाता है.

दरअसल महान कविता वह होती है जो अनुभव व्यवस्था को एक साथ संगती और मुक्ति दोनों प्रदान करती है और 'सरोज स्मृति' में यह गुण अपने सम्पूर्ण औदात्य के साथ उपस्थिति है. पिता और कवि के निरंतर द्वंद्व को झेलने वाली इस कविता में कवि शर्तिया तौर पर पिता पर हावी हो जाता है और पाठकों को अपनी कुशलता से स्तब्ध और चमत्कृत छोड़ जाता है. 'सरोज-स्मृति' आलंबन सरोज की मृत्यु की त्रासदी का पुनराख्यान करता हुआ अद्भुत शोकगीत है, जिसे दूधनाथ सिंह ने लम्बी कथात्मक कविता कहा है यानी गद्य के वृतांत और कविता के भावोद्वेग का संयोग; पर होकर लिखी गई कविता का श्रेष्ठ उदहारण तो है ही.

सन्दर्भ पुस्तकें:

- निराला : आत्महन्ता आस्था, दूधनाथ सिंह, लोकभारती, 2009
- निरालाकृति से साक्षात्कार :, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, 2009
- निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 1989
- शक्तिपुंज निराला , कृष्णदेव झारी, शारदा प्रकाशन, दिल्ली, 1986
- राग-विराग, निराला, लोकभारती प्रकाशन, 1997